ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 2, Issue 5, May 2015

नागार्जुन का साहित्य और मानव यथार्थ

Vijendra Prasad Meena

Lecturer in Hindi, Government PG College, Karauli, Rajasthan, India

सार

हिंदी साहित्य के आधुनिक कल के प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख साहित्यकार बाबा नागार्जुन जनवादी भी थे | साहित्य प्रतिभा के ऐसे व्यक्तित्व जिन्होंने मानव जीवन के सभी पहलुओं को सूझा रूप से देख उसका चित्रण अपनी भावनाओं में पिरोकर शब्दों में ढालकर कथा - साहित्य में साहित्य प्रेमियों के सम्मुख खुलकर रखा है | यदपि रचनाकार के भौतिक व्यक्तित्व का परिचय उसकी कलाकृति में प्रतिबिंबित होता है , तथापि उसकी कलात्मकता से अलग भी उसका संसार होता है | एक अनुसंधाता को किसी कलात्मकता के अध्ययन में उसके व्यक्तित्व का अध्ययन इसीलिए महत्वपूर्ण होता है , कि एक साहित्यकार के व्यक्तित्व की सम्पूर्ण जानकारी उसकी आदतें , उसके शौक , उसकी वृति प्रकृति , उसकी विचारधारा आदि किसी एक स्थान पर उपलब्ध नहीं होती | इसी जिज्ञासा के परिणाम स्वरूप लेखक का बचपन , शिक्षा , दीक्षा , जीविका आदि बातें देखी जाती है | इन परिस्थितियों का लेखक की सजन - प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है | अपने जीवनकाल में प्राप्त अनुभवों से लेखक का निजी एवं साहित्यिक व्यक्तित्व आकार बद्ध होता है | साहित्यकार की अनुभव - सम्पन्नता से उसकी जीवनद्रष्टि तथा कलाद्रष्टि भी विकसित होती है | जीवन में प्राप्त अनुभवों से कलाकार के व्यक्तित्व को आकार प्राप्त होता है | उसी का प्रतिबिंब उसके साहित्य में पड़ता है |

नागार्जुन (30जून 1911- 5 नवम्बर 1998) हिन्दी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार नागार्जुन ने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली संस्कृत एवं बाङ्ला में मौलिक रचनाएँ भी कीं तथा संस्कृत, मैथिली एवं बाङ्ला से अनुवाद कार्य भी किया। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित नागार्जुन ने मैथिली में यात्री उपनाम से लिखा तथा यह उपनाम उनके मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र के साथ मिलकर एकमेक हो गया।

परिचय

नागार्जुन का जन्म १९११ ई० की ज्येष्ठ पूर्णिमा को वर्तमान मधुबनी जिले के सतलखा में हुआ था। यह उन का ननिहाल था। उनका पैतृक गाँव वर्तमान दरभंगा जिले का तरौनी था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था।[1,2] नागार्जुन के बचपन का नाम 'ठक्कन मिसर' था।गोकुल मिश्र और उमा देवी को लगातार चार संताने हुईं और असमय ही वे सब चल बसीं। संतान न जीने के कारण गोकुल मिश्र अति निराशापूर्ण जीवन में रह रहे थे। अशिक्षित ब्राह्मण गोकुल मिश्र ईश्वर के प्रति आस्थावान तो स्वाभाविक रूप से थे ही पर उन दिनों अपने आराध्य देव शंकर भगवान की पूजा ज्यादा ही करने लगे थे। वैद्यनाथ धाम (देवघर) जाकर बाबा वैद्यनाथ की उन्होंने यथाशक्ति उपासना की और वहाँ से लौटने के बाद घर में पूजा-पाठ में भी समय लगाने लगे। "फिर जो पाँचवीं संतान हुई तो मन में यह आशंका भी पनपी कि चार संतानों की तरह यह भी कुछ समय में ठगकर चल बसेगा। अतः इसे 'ठक्कन' कहा जाने लगा। काफी दिनों के बाद इस ठक्कन का नामकरण हुआ और बाबा वैद्यनाथ की कृपा-प्रसाद मानकर इस बालक का नाम वैद्यनाथ मिश्र रखा गया।"

गोकुल मिश्र की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रह गयी थी। वे काम-धाम कुछ करते नहीं थे। सारी जमीन बटाई पर दे रखी थी और जब उपज कम हो जाने से कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं तो उन्हें जमीन बेचने का चस्का लग गया। जमीन बेचकर कई प्रकार की गलत आदतें पाल रखी थीं। जीवन के अंतिम समय में गोकुल मिश्र अपने उत्तराधिकारी (वैद्यनाथ मिश्र) के लिए मात्र तीन कट्ठा

उपजाऊ भूमि और प्रायः उतनी ही वास-भूमि छोड़ गये, वह भी सूद-भरना लगाकर। बहुत बाद में नागार्जुन दंपति ने उसे छुड़ाया।

ऐसी पारिवारिक स्थिति में बालक वैद्यनाथ मिश्र पलने-बढ़ने लगे। छह वर्ष की आयु में ही उनकी माता का देहांत हो गया। इनके पिता (गोकुल मिश्र) अपने एक मात्र मातृहीन पुत्र को कंधे पर बैठाकर अपने संबंधियों के यहाँ, इस गाँव--उस गाँव आया-जाया करते थे। इस प्रकार बचपन में ही इन्हें पिता की लाचारी के कारण घूमने की आदत पड़ गयी और बड़े होकर यह घूमना उनके जीवन का स्वाभाविक अंग बन गया। "घुमक्कड़ी का अणु जो बाल्यकाल में ही शरीर के अंदर प्रवेश पा गया, वह रचना-धर्म की तरह ही विकसित और पुष्ट होता गया।"[3,4]

वैद्यनाथ मिश्र की आरंभिक शिक्षा उक्त पारिवारिक स्थिति में लघु सिद्धांत कौमुदी और अमरकोश के सहारे आरंभ हुई। उस जमाने में मिथिलांचल के धनी अपने यहां निर्धन मेधावी छात्रों को प्रश्रय दिया करते थे। इस उम्र में बालक वैद्यनाथ ने मिथिलांचल के कई गांवों को देख लिया। बाद में विधिवत संस्कृत की पढ़ाई बनारस जाकर शुरू की। वहीं उन पर आर्य समाज का प्रभाव पड़ा और फिर बौद्ध दर्शन की ओर झुकाव हुआ। उन दिनों राजनीति में सुभाष चंद्र बोस उनके प्रिय थे। बौद्ध के रूप में उन्होंने राहुल सांकृत्यायन को अग्रज माना। बनारस से निकलकर कोलकाता और फिर दक्षिण भारत घूमते हुए लंका के विख्यात 'विद्यालंकार परिवेण' में जाकर बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। राहुल और नागार्जुन 'गुरु भाई' हैं। लंका की उस विख्यात बौद्धिक शिक्षण संस्था में रहते हुए मात्र बौद्ध दर्शन का अध्ययन ही नहीं हुआ बल्कि विश्व राजनीति की ओर रुचि जगी और भारत में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन की ओर सजग नजर भी बनी रही। १९३८ ई० के मध्य में वे लंका से वापस लौट आये।फिर आरंभ हुआ उनका घुमक्कड़ जीवन। साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ नागार्जुन राजनीतिक आंदोलनों में भी प्रत्यक्षतः भाग लेते रहे। स्वामी सहजानंद से प्रभावित होकर उन्होंने बिहार के किसान आंदोलन में भाग लिया और मार खाने के अतिरिक्त जेल की सजा भी भुगती। चंपारण के किसान आंदोलन में भी उन्होंने भाग लिया। वस्तुतः वे रचनात्मक के साथ-साथ सक्रिय प्रतिरोध में विश्वास रखते थे। १९७४ के अप्रैल में जेपी आंदोलन में भाग लेते हुए उन्होंने कहा था "सत्ता प्रतिष्ठान की दुर्नीतियों के विरोध में एक जनयुद्ध चल रहा है, जिसमें मेरी हिस्सेदारी सिर्फ वाणी की ही नहीं, कर्म की हो, इसीलिए मैं आज अनशन पर हूँ, कल जेल भी जा सकता हूँ।" और सचमुच इस आंदोलन के सिलसिले में आपात् स्थिति से पूर्व ही इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और फिर काफी समय जेल में रहना पड़ा।

१९४८ ई० में पहली बार नागार्जुन पर दमा का हमला हुआ और फिर कभी ठीक से इलाज न कराने के कारण आजीवन वे समय-समय पर इससे पीड़ित होते रहे। दो पुत्रियों एवं चार पुत्रों से भरे-पूरे परिवार वाले नागार्जुन कभी गार्हस्थ्य धर्म ठीक से नहीं निभा पाये और इस भरे-पूरे परिवार के पास अचल संपत्ति के रूप में विरासत में मिली वही तीन कट्ठा उपजाऊ तथा प्रायः उतनी ही वास-भूमि रह गयी।

नागार्जुन आधुनिक हिंदी साहित्य के कवि एवं कथाकार के रूप में उभर आये है। उन्होंने कथा साहित्य का सृजन कर न केवल हिंदी साहित्य को सम्रद्ध किया है बल्कि जन - जन की पीड़ा को आत्मसात किया है। और अपने पाठकों समीक्षकों को भी उस पीड़ा से पूरी संवेदनशील से साक्षात्कार कराने में सक्षम हुए है। वे साहित्यकार के उच्च आसन पर बैठ कर जनता के प्रति केवल सहानभूति ही व्यक्त नहीं करते बल्कि आम जनता से घुलमिल कर उसके ही एक अभिंग अंग बन कर उसके सुख - दुःख को पुरे हर्षोल्लास और देशज संवेदन से जीते है। इन अर्थों में उनका साहित्य अनुभूति की प्रमाणिकता से ओत - प्रोत होने के कारण सहज स्वभाविक और पठनीय है। उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए पाठक को स्वाभिक संवेदनों का स्वाद मिलता है। उनका साहित्य अपनी साधारणता से असाधारण है।
हिंदी कथा - साहित्य को अनेक कथा साहित्यकारों ने अपना अमूल्य योगदान देकर समर्द्ध किया है।[5,6] हिंदी कथा साहित्य में जनवादी चेतना तीव्र होती हुई दिखाई देती है। जिसमें युगीन यथार्थ और उपेक्षित जन - जीवन का चित्रण किया जा रहा है। कथा साहित्य में मानव जीवन की विविध

IJMRSETM

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 2, Issue 5, May 2015

अनुभूतियों, संवेदनाओ की यथार्थ अभिव्यक्ति हो रही है। हिंदी-साहित्य के प्रतिबद्ध लेखकों में बाबा नागार्जुन का विशिष्ट स्थान है। चाहे कविता हो या गद की कोई विधा, नागार्जुन के लिए लेखन का उद्देश्य सामाजिक राजनीतिक यथार्थ का चित्रण और शोषित और पीड़ित आम-आदमी से प्रतिबद्दता है। नागार्जुन के कथा-साहित्य में जनवादी चेतना की प्रवृतियां भरपूर मिलती है। अत: इस दिशा में कथा साहित्य का विवेचन करना अत्यंत आवश्यक है।

नागार्जुन का असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था परंतु हिन्दी साहित्य में उन्होंने नागार्जुन तथा मैथिली में यात्री उपनाम से रचनाएँ कीं। काशी में रहते हुए उन्होंने 'वैदेह' उपनाम से भी कविताएँ लिखी थीं। सन् 1936 में सिंहल में 'विद्यालंकार परिवेण' में ही 'नागार्जुन' नाम ग्रहण किया। आरंभ में उनकी हिन्दी कविताएँ भी 'यात्री' के नाम से ही छपी थीं। वस्तुतः कुछ मित्रों के आग्रह पर १९४१ ईस्वी के बाद उन्होंने हिन्दी में नागार्जुन के अलावा किसी नाम से न लिखने का निर्णय लिया था।

नागार्जुन की पहली प्रकाशित रचना एक मैथिली कविता थी जो १९२९ ई० में लहेरियासराय, दरभंगा से प्रकाशित 'मिथिला' नामक पत्रिका में छपी थी। उनकी पहली हिन्दी रचना 'राम के प्रति' नामक कविता थी जो १९३४ ई० में लाहौर से निकलने वाले साप्ताहिक 'विश्वबन्धु' में छपी थी।

नागार्जुन लगभग अड़सठ वर्ष (सन् 1929 से 1997) तक रचनाकर्म से जुड़े रहे। कविता, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, निबन्ध, बाल-साहित्य -- सभी विधाओं में उन्होंने कलम चलायी। मैथिली एवं संस्कृत के अतिरिक्त बाङ्ला से भी वे जुड़े रहे। बाङ्ला भाषा और साहित्य से नागार्जुन का लगाव शुरू से ही रहा। काशी में रहते हुए उन्होंने अपने छात्र जीवन में बाङ्ला साहित्य को मूल बाङ्ला में पढ़ना शुरू किया। मौलिक रुप से बाङ्ला लिखना फरवरी 1978 ई० में शुरू किया और सितंबर 1979 ई० तक लगभग ५० कविताएँ लिखी जा चुकी थीं। कुछ रचनाएँ बँगला की पत्र-पत्रिकाओं में भी छपीं। कुछ हिंदी की लघु पत्रिकाओं में लिप्यंतरण और अनुवाद सहित प्रकाशित हुईं। मौलिक रचना के अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत, मैथिली और बाङ्ला से अनुवाद कार्य भी किया। कालिदास उनके सर्वाधिक प्रिय कवि थे और 'मेघदूत' प्रिय पुस्तक। मेघदूत का मुक्तछंद में अनुवाद उन्होंने १९५३ ई० में किया था। जयदेव के 'गीत गोविंद' का भावानुवाद वे 1948 ई० में ही कर चुके थे। वस्तुतः १९४४ और १९५४ ई० के बीच नागार्जुन ने अनुवाद का काफी काम किया। बाङ्ला उपन्यासकार शरतचंद्र के कई उपन्यासों और कथाओं का हिंदी अनुवाद छपा भी। कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के उपन्यास 'पृथ्वीवल्लभ' का गुजराती से हिंदी में अनुवाद १९४५ ई० में किया था। १९६५ ई० में उन्होंने विद्यापति के सौ गीतों का भावानुवाद किया था। बाद में विद्यापति के और गीतों का भी उन्होंने अनुवाद किया।इसके अतिरिक्त उन्होंने विद्यापति की 'पुरुष-परीक्षा' (संस्कृत) की तेरह कहानियों का भी भावानुवाद किया था जो 'विद्यापति की कहानियाँ' नाम से १९६४ ई० में प्रकाशित हुई थी।[7,8]

विचार-विमर्श

हिंदी कविता के दूसरे कबीर के रूप में लोकप्रिय नागार्जुन का यह एकांगी परिचय है। कबीर ने तो केवल कविताएँ ही रचीं, लेकिन इस आधुनिक कबीर उर्फ नागार्जुन ने प्रचुर मात्रा में गद्य साहित्य भी रचा और अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से समयुगीन समस्याओं की गहरी पड़ताल भी की। उनके तमाम उपन्यास इस बात के प्रमाण हैं कि उन्होंने हिंदी कथा-साहित्य की प्रेमचंद-परम्परा का ही सुविस्तार किया। प्रेमचंद की ही भाँति नागा र्जुन भी गाँवों में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध रचनात्मक जेहाद छेड़ते हैं। अपनी कविताओं के माध्यम से वे लोकजागरण करते नजर आते हैं और अपनी कथाओं में भी वे लोकजीवन में व्याप्त विसंगतियाँ, अन्याय, अनाचार-पापाचार, सामंतवाद, मजदूरों की पीड़ाओं से होते हुए साम्राज्यवाद आदि अनके तरह की बुराइयों पर गंभीर-विमर्श करते हैं। कथा के मध्य संवादों के माध्यम से वे अपने मन की बात कहते चलते हैं। यह बहुत बड़ा अन्याय-सा लगता है कि लोग नागार्जुन को केवल कवि-रूप में देखते हैं जबकि उनका कथाकार वाला पक्ष भी कम उल्लेखनीय नहीं है।

हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद के नाम पर या आधुनिकबोध के नाम पर उपन्यासों में नागरजीवन के अनेक परिवर्तनों को रेखांकित करने की होड़-सी मची रही जबकि गाँव का जीवन निरंतर त्रासद

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 2, Issue 5, May 2015

स्थितियों से दो-चार होता रहा। नागार्जन ने अपने कथाकार को गाँवों तक सीमित करते हुए जो कथाएँ कहीं हैं, वे क्लासिक बन गईं। उनके उपन्यासों की गहरी आंचलिकता हमें गाँव के जीवन से गहरे तक जोड़ देती हैं। गाँवों के जीवन में पनपने वाले पाप और पाखंड को नागार्जुन ने निकट से देखा और महसूसा। बहुत हद तो उन्होंने अपने इर्द-गिर्द उन त्रासदियों को भोगा भी इसीलिए उन की अधिकांश कथाएँ कपोल-कल्पित बिल्कुल नहीं लगती, वरन् यही महसूस होता है, कि लेखक एक रिपोर्टर की मानिंद आँखों देखा हाल बयाँ रहा हो। नागार्जन की कथाओं से गुजरते हुए कम से कम मुझे तो बिल्कुल ही महसूस नहीं हुआ कि मैं कोई कहानी पढ़ रहा हूँ। लगा, जैसे वे अपने समय की पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों का हलफिया सत्य उद्‌घाटित कर रहे हैं।[9,10]

नागार्जुन का कथाकार अपनी छवि चमकाने के लिए या कोई कलात्मक खिलंदड़ेपन की रौ में बह कर कथाएँ नहीं कहता, वरन वह अपने समय के विरुद्ध हस्तक्षेप करने के लिए एक सायास कोशिश करता है। यही लेखकीय-धर्म है कि वह अपनी रचनाओं के माध्यम से युग के सच को रूपायित करे। और वैसे भी नागार्जुन चूकने वाले लेखक नहीं रहे। जिस बेबाकी के साथ उन्होंने कविताएँ लिखीं, उसी बेबाकी और हिम्मत के साथ उन्होंने गाँव की व्यथा-कथा कही। उनकी कहानियों में ब्राह्मणवाद, सामंतवाद और अनेक तरह के पाखंडवादों के खिलाफ नागार्जुन की कथाएँ एक तरह का आंदोलन हैं, जो आज भी जारी रहना चाहिए। तभी तो नागार्जुन जैसे लेखक रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, बलचनमा, हीरक जयंती, वरुण के बेटे, नई पौध, दुखमोचन, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, कुंभीपाक, गरीबदास और पारो जैसी कालजयी कथात्मक कृतियाँ रच पाते है। आसमान में चंदा तैरे उनका इकलौता कथा संग्रह है। उन्होंने कहानियाँ कम ही लिखीं मगर उसकी भरपाई एक दर्जन उपन्यास लिख कर कर दी। नागार्जुन ने जिन गाँवों की कथाएँ कहीं हैं, वे गाँव आज भी लगभग वैसी ही त्रासदियाँ झेल रहे हैं। इसलिए नागार्जुन पहले से ज्यादा प्रासंगिक बने हुए हैं।

नागार्जुन जिन गाँवों को, और जिन स्थितियों को मार्मिक वर्णन करते हैं, वे स्थितियाँ आज भी द्दष्टव्य हो जाती हैं। इसीलिए हर कालजयी लेखक की कृतियाँ वर्षों तक जीवंत और सामयिक बनी रहती है। रतिनाथ की चाची जैसे उपन्यास मानो आज के समाज की कथा कह रहे हैं। उपन्यास का यह संवाद भी झन्नाटेदार तमाचे की तरह लगता है, जब गौरी का गर्भ गिराने के लिए आने वाली चमाइन दो टूक कहती है, " एक बात कहती हूँ। माफ करना बड़ी जातवालों की बिरादरी बड़ी मलेच्छ, बड़ी निष्ठुर होती है मलकाइन। हमारी भी बहू-बेटियाँ राँड हो जाती हैं पर हमारी बिरादरी में किसी के पेट से आठ-आठ, नौ-नौ महीने का बच्चा निकाल कर जंगल में फेंक आने का रिवाज नहीं है। ओह, कैसा कलेजा होता है तुम लोगों का, मइया री मइया" ।[11,12] इस संवाद के बरक्स आज के हालात देखें तो जिस मलेच्छ समाज की ओर चमाइन इशारा करती है, वह मलेच्छ समाज तो अब न केवल गाँवों में वरन् शहरों तक पसर चुका है। इस तरह देखें तो नागार्जुन जिन मुद्दों का संस्पर्श करते हैं, वे मुद्दे आज भी हमें मथ रहे हैं। गाँवों में रहने वाली नारियों की दुर्दशा को तो नागार्जुन जैसे कुछ ज्यादा ही मन लगा कर अभिव्यक्त करते हैं। नारी के दुख से दु:खी नागार्जुन ने एक बार एक समाचार पत्र में यहाँ तक लिख दिया था, कि "अगर मेरा अगला जन्म हो तो मैं नारी बनना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि सबसे बड़ी हरिजन जो हैं महिलाएँ हैं। इनका दलितपन कब समाप्त होगा, यह हमें नजर नहीं आ रहा है"। इस कथन को देखें और नारी विषयक नागार्जुन की कथाएँ देखें तो साफ हो जाता है, कि यह कथाकार स्त्री के सवाल पर कितना संजीदा है।

1. नागार्जुन का रचना-संसार - विजय बहादुर सिंह (प्रथम संस्करण-1982, संभावना प्रकाशन, हापुड़ से; पुनर्प्रकाशन-2009, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली से)

IJMRSETM

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 2, Issue 5, May 2015

2. नागार्जुन की कविता - अजय तिवारी, (संशोधित संस्करण-2005) वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली से)
3. नागार्जुन का कवि-कर्म - खगेंद्र ठाकुर (प्रथम संस्करण-2013, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नयी दिल्ली से)
4. जनकवि हूँ मैं - संपादक- रामकुमार कृषक (प्रथम संस्करण-2012 {'अलाव' के नागार्जुन जन्मशती विशेषांक का संशोधित पुस्तकीय रूप}, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, नयी दिल्ली से)
5. नागार्जुन : अंतरंग और सृजन-कर्म - संपादक- मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, चंचल चौहान {'नया पथ' के नागार्जुन जन्मशती विशेषांक का संशोधित पुस्तकीय रूप}, (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से)
6. आलोचना सहस्राब्दी अंक 43 (अक्टूबर-दिसंबर 2011), संपादक- अरुण कमल
7. तुमि चिर सारथि यात्री नागार्जुन आख्यान तारानंद वियोगी (मैथिली से अनुवाद-केदार कानन, अविनाश) (पहले 'पहल' पुस्तिका के रूप में फिर अंतिका प्रकाशन, दिल्ली से)
8. युगों का यात्री नागार्जुन की जीवनी तारानंद वियोगी (रज़ा पुस्तकमाला के तहत राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली से प्रकाशित)[13,14]

परिणाम

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार -1969 (मैथिली में, 'पत्र हीन नग्न गाछ' के लिए)
2. भारत भारती सम्मान (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा)
3. मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (मध्य प्रदेश सरकार द्वारा)
4. राजेन्द्र शिखर सम्मान -1994 (बिहार सरकार द्वारा)
5. साहित्य अकादमी की सर्वोच्च फेलोशिप से सम्मानित
6. राहुल सांकृत्यायन सम्मान पश्चिम बंगाल सरकार से

हिन्दी अकादमी पुरस्कार

जनवादी चेतना विश्व के सभी महँ साहित्यकारों की कृतियों में द्रष्टिगोचर होती है| किसी न किसी प्रसंग में साहित्यकार एस चेतना को स्थान देते हुए जनता के साहस, उत्साह एवं परोपकार भावनाओं को आरोपित कराने का साहस करता है| जनता के प्रतिनिधि बनकर ये लेखक लोगों की आशा-निराशा का वर्णन करते यूए उन्हें प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते है| हिंदी में जनता की स्थिति गति की लेखक पहले से करते आ रहे है, किन्तु जनता की धड़कन को ध्वनित करने वाली चेतना बहुत कम लेखकों में पाई जाती है| जनवादी चेतना समस्त समाज के जन-जन के मन-मन की आशा-निराशा इनकी स्थिति गति उनके विश्वास शोषकों के प्रति उनकी क्रांतिकारी चेतना आदि को पूरी तरह से जनता से जोड़ती है| यह साहित्य को जनवादी साहित्य बनाती है| हम इस जनवादी साहित्य में अपने मस्तिष्क के भावों और ह्रदय की धड़कनों को सुन सकते है| अत: जनवादी चेतना अत्यंत महत्वपूर्ण है||[15,16]

लोकतंत्र तथा जनवाद का अध्ययन करते समय उसके दो स्वरुप सामने आते है|
1. पूंजीवादी जनवाद
2. समाजवादी जनवाद

1. पूंजीवादी जनवाद

दुनिया के बहुत बड़े हिस्से में सामंतवादी व्यवस्था थी| इस सामंती व्यवस्था का विरोध होने लगा, संघर्ष होने लगा| फलस्वरूप परिणाम यह हुआ कि यह व्यवस्था टूटने लगी, चरमरा गरी, खत्म हो

गयी| जहाँ पर यह हुआ वहां पर पूजीपति एवं धनिक वर्ग के हाथ में समाज व्यवस्था एवं सत्ता चला गया| इसे ही पूजीवादी जनवाद कहा जाने लगा| पूंजीवादी जनवाद यह खास अर्थात् विशिष्ट वर्ग तक ही सिमित रहा| पूंजीवादी जनवाद यह संकुलित दायरे में ही घूमता रहा| जनवाद है| जहाँ ये जनवाद मेहनतकश लोगों के लिए दमन का एक तंत्र था वहां यह कुछ अल्पसंख्यक वर्ग के लिए जनवाद होता था| फिर भी यह कहना उचित होगा कि यह जनवाद तानाशाही से ठीक ही था|

2. समाजवादी जनवाद

पूंजीवादी जनवाद के उत्पीड़न की दें याने समाजवादी जनवाद है| शोषित, पीड़ित, उपेक्षित जनता का समाजवादी जनवाद था| यह जनवाद बहुसंख्यक लोगों का जनवाद था| इसके दायरे में बहुत बड़ा समाज आता था| एस कारण एस जनवाद को समाजवादी जनवाद तथा जनता का जनवाद भी कहा जाने लगा| समाजवादी जनवाद में सत्ता का केंद्र था, सर्वहारा व्यक्ति इसके साथ में मजदूर एवं मेहनतकश वर्ग की शक्ति रहती थी| इसकी बुनियाद में समाजवादी विचारधारा रहती है| इसका प्रमुख उद्देश्य यह होता है, कि समाजवादी समाजव्यवस्था का निर्माण करना और इसे मार्क्सवाद में रूपांतरित करना| यह जनवाद जनता के नैतिक, संस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक एकता का दृढ आधार बनता है|

साधारण व्यक्ति से लेकर महान साहित्यकार, वैज्ञानिक, दार्शनिक, समाजशास्त्री सभी अपने युगीन परिवेश से प्रभावित व संचालित होते है| कोई भी साहित्यकार अपने चारों ओर के अच्छे-बुरे प्रभावों से चाहते हुए भी अछूता नहीं रह सकता | अपनि आंतरिक जन्मजात प्रतिभा के साथ ही मनुष्य का युगीन परिवेश उसके व्यक्तित्व व क्रतिव्य का नियामक होता है| अत: किसी भी साहित्यकार के क्रतिव्य का अध्ययन उसके युगीन संदर्भ को समझे बिना अधूरा ही होता है| वह जिस वातावरण में रहता है, तथा जिस युग में साँस लेता है, उस युग की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, तथा परिस्थितियां प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसके दिल और दिमाग को प्रभावित कराती है, साथ ही तत्कालीन ज्वलंत सवाल उसके मस्तिष्क को मथते है| साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल की परिस्थिति से प्रभावित होता है| जब कोई लहर देश में उठती है, तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव होता है, और उसकी विशाल आत्मा अपने देश बंधुओं के कष्टों से विचलित हो उठती है, और उस तीव्र लहर में वह रों उठता है, पर उसके रुदन में भी व्यापकता होती है| वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिक रहता है ||[17]

नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य-परंपरा ही जीवंत रूप में उपस्थित देखी जा सकती है। उनका कवि-व्यक्तित्व कालिदास और विद्यापति जैसे कई कालजयी कवियों के रचना-संसार के गहन अवगाहन, बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोन्मुख दर्शन के व्यावहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिन्ताओं एवं संघर्षों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा लोकसंस्कृति एवं लोकहृदय की गहरी पहचान से निर्मित है। उनका 'यात्रीपन' भारतीय मानस एवं विषय-वस्तु को समग्र और सच्चे रूप में समझने का साधन रहा है। मैथिली, हिन्दी और संस्कृत के अलावा पालि, प्राकृत, बांग्ला, सिंहली, तिब्बती आदि अनेकानेक भाषाओं का ज्ञान भी उनके लिए इसी उद्देश्य में सहायक रहा है। उनका गतिशील, सक्रिय और प्रतिबद्ध सुदीर्घ जीवन उनके काव्य में जीवंत रूप से प्रतिध्वनित-प्रतिबिंबित है। नागार्जुन सही अर्थों में भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम कवि हैं। उन्होंने आज़ादी के पहले और बाद में भी कई बड़े जनांदोलनों में भाग लिया था। 1939 से 1942 के बीच बिहार में किसानो के एक प्रदर्शन का नेतृत्व करने की वजह से जेल में रहे। आज़ादी के बाद लम्बे समय तक वो पत्रकारिता से भी जुड़े रहे। जन संघर्ष में अडिग आस्था, जनता से गहरा लगाव और एक न्यायपूर्ण समाज का सपना, ये तीन गुण नागार्जुन के व्यक्तित्व में ही नहीं, उनके साहित्य में भी घुले-मिले हैं। निराला के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने इतने छंद, इतने ढंग, इतनी शैलियाँ और इतने काव्य रूपों का इस्तेमाल किया है। पारंपरिक काव्य रूपों को नए कथ्य के साथ इस्तेमाल करने और नए काव्य कौशलों को संभव करनेवाले वे अद्वितीय कवि हैं। उनके कुछ काव्य शिल्पों में ताक-झाँक करना हमारे लिए मूल्यवान हो सकता है। उनकी अभिव्यक्ति का ढंग तिर्यक भी है, बेहद ठेठ और सीधा भी। अपनी तिर्यकता में वे जितने बेजोड़ हैं, अपनी वाग्मिता में वे उतने ही विलक्षण हैं। काव्य रूपों को इस्तेमाल करने में उनमें किसी प्रकार की कोई अंतर्बाधा नहीं है।

IJMRSETM

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 2, Issue 5, May 2015

उनकी कविता में एक प्रमुख शैली स्वगत में मुक्त बातचीत की शैली है। नागार्जुन की ही कविता से पद उधार लें तो कह सकते हैं-स्वागत शोक में बीज निहित हैं विश्व व्यथा के।भाषा पर बाबा का गज़ब अधिकार है। देसी बोली के ठेठ शब्दों से लेकर संस्कृतनिष्ठ शास्त्रीय पदावली तक उनकी भाषा के अनेकों स्तर हैं। उन्होंने तो हिन्दी के अलावा मैथिली, बांग्ला और संस्कृत में अलग से बहुत लिखा है। जैसा पहले भाव-बोध के संदर्भ में कहा गया, वैसे ही भाषा की दृष्टि से भी यह कहा जा सकता है कि बाबा की कविताओं में कबीर से लेकर धूमिल तक की पूरी हिन्दी काव्य-परंपरा एक साथ जीवंत है। बाबा ने छंद से भी परहेज नहीं किया, बल्कि उसका अपनी कविताओं में क्रांतिकारी ढंग से इस्तेमाल करके दिखा दिया। बाबा की कविताओं की लोकप्रियता का एक आधार उनके द्वारा किया गया छंदों का सधा हुआ चमत्कारिक प्रयोग भी है।[18]

समकालीन प्रमुख हिंदी साहित्यकार उदय प्रकाश के अनुसार "यह जोर देकर कहने की ज़रूरत है कि बाबा नागार्जुन बीसवीं सदी की हिंदी कविता के सिर्फ 'भदेस' और मात्र विद्रोही मिजाज के कवि ही नहीं, वे हिंदी जाति के सबसे अद्वितीय मौलिक बौद्धिक कवि थे। वे सिर्फ 'एजिट पोएट' नहीं, पारंपरिक भारतीय काव्य परंपरा के विरल 'अभिजात' और 'एलीट पोएट' भी थे।"उदय प्रकाश ने बाबा नागार्जुन के व्यक्तित्व-निर्माण एवं कृतित्व की व्यापक महत्ता को एक साथ संकेतित करते हुए एक ही महावाक्य में लिखा है कि "खुद ही विचार करिये, जिस कवि ने बौद्ध दर्शन और मार्क्सवाद का गहन अध्ययन किया हो, राहुल सांकृत्यायन और आनंद कौसल्यायन जैसी प्रचंड मेधाओं का साथी रहा हो, जिसने प्राचीन भारतीय चिंतन परंपरा का ज्ञान पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत जैसी भाषाओं में महारत हासिल करके प्राप्त किया हो, जिस कवि ने हिंदी, मैथिली, बंगला और संस्कृत में लगभग एक जैसा वाग्वैदग्ध्य अर्जित किया हो, अपनी मूल प्रज्ञा और संज्ञान में जो तुलसी और कबीर की महान संत परंपरा के निकटस्थ हो, जिस रचनाकार ने 'बलचनमा' और 'वरुण के बेटे' जैसे उपन्यासों के द्वारा हिंदी में आंचलिक उपन्यास लेखन की नींव रखी हो जिसके चलते हिंदी कथा साहित्य को रेणु जैसी ऐतिहासिक प्रतिभा प्राप्त हुई हो, जिस कवि ने अपने आक्रांत निजी जीवन ही नहीं बल्कि अपने समूचे दिक् और काल की, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों और व्यक्तित्व पर अपनी निर्भ्रांत कलम चलाई हो, (संस्कृत में) बीसवीं सदी के किसी आधुनिक राजनीतिक व्यक्तित्व (लेनिन) पर समूचा खण्डकाव्य रच डाला हो, जिसके हैंडलूम के सस्ते झोले में मेघदूतम् और 'एकानमिक पालिटिकल वीकली' एक साथ रखे मिलते हों, जिसकी अंग्रेजी भी किसी समकालीन हिंदी कवि या आलोचक से बेहतर ही रही हो, जिसने रजनी पाम दत्त, नेहरू, बर्तोल्त ब्रेख्ट, निराला, लूशुन से लेकर विनोबा, मोरारजी, जेपी, लोहिया, केन्याता, एलिजाबेथ, आइजन हावर आदि पर स्मरणीय और अत्यंत लोकप्रिय कविताएं लिखी हों -- ... बीसवीं सदी की हिंदी कविता का प्रतिनिधि बौद्धिक कवि वह है...।"

निष्कर्ष

हर लेखक का जीवन के प्रति अपना विशिष्ट द्रष्टिकोण होता है, अपने जीवन द्रष्टिकोण होता है अपने जीवन द्रष्टिकोण को वह पाठकों तक पहुँचाना चाहता है| इसलिए वह साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति कर्ता है| उपन्यासकार नागार्जुन एक सर्जनशील कलाकार है| गरीबी, दरिद्रता, भूख, पीड़ा, का उन्होंने स्वयं बचपन से अनुभव किया है| भ्रमणशील प्रवत्ति के कारण भारतीय उपेक्षित समाज को उन्होंने नजदीक से देखा है, परखा है, अत: गरीबों के पक्षधर बनकर उन्होंने साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति की है| उपन्यासकार नागार्जुन परमार्थ में ही जीवन की सार्थकता मानते है| अपना जीवन कार्य पूर्ण होते ही वह देह त्याग करना चाहते है| मृत्यु के बाद भी लोगों की सेवा करने का ब्रत वे नहीं छोड़ते| बरगद का पेड़ अपनी सुखी टहनियों को जलाकर ईट पकाकर ग्राम कमेटी पर मकान बनाने का परामर्श जैकिसुन से देता है| नागार्जुन के प्राय: सभी उपन्यास ग्राम जीवन पर ही केन्द्रित है, क्योंकि यही वह जीवन है जिससे नागार्जुन सदा से ही परिचित रहे, जो इनके जीवन व अनुभूति का अभिन्न अंग रहा, जिसके प्रति उनकी प्रति उनकी सहानुभूति हार्दिक सच्ची व आत्मीय है|

उपन्यासों व कहानियों के प्रणयन ने हिंदी साहित्य को सम्रद्ध किया है| जनवादी रचनाकार नागार्जुन की उनकी वैचारिक प्रष्ठभूमि में देश का आम आदमी, कृषक मजदूर कभी ओझल नहीं हो सका| इसी कारण अनेक भाषाओँ के ज्ञाता व विद्वान होने के बावजूद भी उन्होंने आम जन की भाषा में

IJMRSETM

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 2, Issue 5, May 2015

ही साहित्य सृजन किया है| आम जन की बोलियाँ और लोक जीवन की धुन उनके साहित्य में रची बसी है|

नागार्जुन अनेक भाषाओँ के ज्ञाता थे| संस्कृत पाली मैथली बंगला तो उन्हें बचपन से ही आती थी| संस्कृत काव्य रचना में छात्र जीवन में ही उन्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था| आशु रचना में भी वे प्रवीण थे, संक्षेप में उनके उपन्यासों व काव्य ग्रंथों में उनकी भाषा के विविध स्वरूपों का वर्णन निम्नलिखित रूप से करेगे| भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है| रचनाकार की अभिव्यक्ति का सम्बन्ध उसकी वैचारिक प्रतिबद्दता से ही होता है| किसी भी रचनाकार की शक्ति उसकी भाषा और शैली ही होती है| शैली का विशिष्ट उसकी अलग पहचान बनाता है| उसी आधार पर नागार्जुन के उपन्यासों की भाषा शैली की अभिव्यक्ति हुई है|

नागार्जुन के सभी कथा साहित्य में जनवादी चेतना की सभी प्रवर्तियां लक्षित होती है| उनके कथा साहित्य के केंद्र में सामान्य जन है, और उनके जीवन की त्रासदी को सूक्ष्मता से देखने का प्रयत्न इन कथा साहित्य में हुआ है| सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक सभी क्षेत्र में सामान्य जन का शोषण लगातार हो रहा है| इस शोषण और अन्याय का विरोध करना एवं शोषणमुक्त मानवीय भावनाओं से युक्त समाज का निर्माण करना ही जनवाद लेखक नागार्जुन का उद्देश्य है| सामाजिक व्यवस्था शोषण पर आधारित व्यवस्था है|नागार्जुन ने उपन्यासों को भांति कहानियों में सर्वहारा वर्ग के जीवन के विविध पहलुओं की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है| नागार्जुन एक जनवादी व प्रगतिशील कथाकार है, उन्होंने आम जनता के जीवन को स्वंय भोगा ही नहीं बल्कि प्रत्यक्षदर्शी भी रहे है| जनवादी साहित्य विद्रोह विरोध एवं संघर्ष को प्राथमिकता प्रदान करता है| इन्ही विषयों पर जनवादी साहित्य खड़ा हुआ है|

नागार्जुन के कथा साहित्य में जनभाषा और शिल्पशैली का प्रयोग देखने को मिलता है| जनभाषा का प्रयोग जनता के समझने के लिए किया गया है| इसका कारण यह है कि जनभाषा आम आदमी समझ सकता है उनकी साहित्य तथा साहित्य केवल बुद्धिजीवियों के लिए नहीं है| वह आम आदमी तथा सर्वहारा व्यक्ति के लिए भी समझने योग्य है| इसलिए जनभाषा का प्रयोग वे करते है| उन्होंने जनभाषा का सहारा लिया है| नागार्जुन का साहित्य वादों से रहित एवं पूर्वगृह रहित है| उसमे किसी के प्रति पूर्वगृह नहीं है| समय के अनुकूल वे लिखते है, उनकी रचनाये यथार्थ तथा वस्तुस्थिति को व्यक्त करती है|[19]

संदर्भ

1) नागार्जुन रचनावली, खण्ड-1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003, पृष्ठ- V.
2) “Unsung Heroes of Bihar – Nagarjun”. मूल से 13 अगस्त 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 दिसंबर 2008.
3) नागार्जुन का रचना-संसार - विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2014, पृष्ठ-19.
4) द्रष्टव्य- AN INDIAN EPHEMERIS, vol. VII (A.D 1800-1999), स्वामी कन्नू पिल्लै, p. 224.
5) “11 जून, 1911 ई० का हक्पञ्चाङ्ग” मूल से 5 जुलाई 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 जून 2012
6) नागार्जुन: मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990 पृष्ठ-13.
7) नागार्जुन: मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990 पृष्ठ-15.
8) नागार्जुन: मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990 पृष्ठ-16.
9) नागार्जुन: मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990 पृष्ठ-17.

IJMRSETM

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 2, Issue 5, May 2015

10) नागार्जुन : मेरे बाबूजी , शोभाकांत , वाणी प्रकाशन , नयी दिल्ली , प्रथम संस्करण -1990 पृष्ठ -19.
11) नागार्जुन रचना संचयन , संपादक - राजेश जोशी , साहित्य अकादमी , नयी दिल्ली , पृष्ठ -327.
12) नागार्जुन का रचना - संसार , विजय बहादुर सिंह , वाणी प्रकाशन , नयी दिल्ली , संस्करण -2014 , पृष्ठ -30.
13) नागार्जुन रचनावली , खण्ड -1 , राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली , पेपरबैक संस्करण -2003 , पृष्ठ - XI.
14) नागार्जुन रचनावली , खण्ड -1 , राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली , पेपरबैक संस्करण -2003 , पृष्ठ - VI.
15) नागार्जुन रचनावली , खण्ड -3 , राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली , पेपरबैक संस्करण -2003 , पृष्ठ - VIII.
16) नागार्जुन रचनावली , खण्ड -1 , राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली , पेपरबैक संस्करण -2003 , पृष्ठ - XIV.
17) नागार्जुन रचनावली , खण्ड -3 , राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली , पेपरबैक संस्करण -2003 , पृष्ठ - IX.
18) नागार्जुन रचनावली , खण्ड -1 , राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली , पेपरबैक संस्करण -2003 , पृष्ठ - VII.
19) नागार्जुन रचनावली , खण्ड -7 , राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली , पेपरबैक संस्करण -2003 , पृष्ठ - V-VI.